IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–1959.p- ISSN: 2320–1940 Volume 10, Issue 1 Ser. 1 (Jan. – Feb. 2020), PP 62-66
www.iosrjournals.org

शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान विषयों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सारांश

यह अध्ययन स्नातक के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान विषयों की अभिवृत्ति में सार्थक तनाव की भूमिका को समझने का प्रयास करता है। एक सिद्धांत था कि छात्रों की अपेक्षाओं, शैक्षणिक उपलब्धि और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक सकारात्मक संबंध होगा।

परिचय

माता-पिता बच्चों के विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और माता-पिता अक्सर परीक्षण के लिए चिंतित रहते हैं, खासकर बच्चों में। उनकी इच्छाएं कभी-कभी बच्चों को परेशान करती हैं और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करती हैं। माता-पिता की जरूरतों और लक्ष्यों का उनके बच्चों के प्रदर्शन पर व्यापक या व्यापक प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से, इस बार माता-पिता और किशोरों की अपेक्षाओं को समझने के लिए इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास तनाव का कारण बनता है जब वे तैयार नहीं होते हैं जो अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं और शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं (1)।

माता-पिता की अपेक्षा

माता-पिता और उनकी अपेक्षाएं नवजात शिशु की सामान्य प्रकृति को प्रभावित करती हैं। साथ ही माता-पिता की जरूरतें बच्चों की शिक्षा और भविष्य के प्रदर्शन में एक अभिन्न अंग हैं। माता-पिता की इच्छा है कि अध्ययन से जुड़े बच्चों के अनुपालन की इच्छा बच्चों की जरूरतों और उपलब्धियों को प्रभावित करे और जल्दी इच्छा अपने बच्चे के पूरे वर्ष के साथ जारी रह सकती है। माता-पिता अपने बच्चों से जुड़े अपेक्षित व्यवहारों और गुणों की एक श्रृंखला के रूप में कार्य करते हैं (2)।

माता-पिता उम्मीद करते हैं कि उनके बच्चे शिक्षा के मामले में अच्छे ग्रेड प्राप्त करेंगे। व्यक्तिगत शिक्षा के बावजूद और पहले बौद्धिक क्षमता में मूल्यांकन किया जाएगा, शैक्षणिक संज्ञानात्मक कौशल में शैक्षिक मूल्य को पहचाना जाएगा, लेकिन यह प्रशिक्षण उन्हें प्रोत्साहित भी करेगा।

शैक्षणिक तनाव

तनाव का तात्पर्य मनोवैज्ञानिक अच्छे दिखने के खतरे की धारणा से है; भौतिक, पवित्र शारीरिक प्रतिक्रियाओं और अनुकूलन (वर्तमान या नियोजित) की एक श्रृंखला से आता है। तनाव दो प्रकार का होता है। तनाव के तहत किसी भी अवस्था में यूस्ट्रेस (सकारात्मक तनाव) होता है जब व्यक्ति सांस लेना शुरू करता है तो सही मात्रा में सनसनी होती है। दूसरा है तनाव (नकारात्मक तनाव) जो आपके जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

शैक्षणिक तनाव का छात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह उन चीजों में से एक था जो छात्र की अवसाद, निराशा, संवेदनशीलता, आत्म-हानिकारक व्यवहार और आत्म-विनाशकारी व्यवहार (आत्महत्या) के प्रति बुनियादी विचारों में योगदान देता है। शैक्षणिक तनाव का अर्थ है शैक्षिक चिंता। शैक्षणिक तनाव तनाव का एक स्रोत है जिसका सामना युवा करते हैं। छात्रों की एक छोटी संख्या अक्सर भारी शैक्षणिक भार और शैक्षणिक प्रदर्शन से कम संतुष्टि महसूस करती है (3)। इसके अलावा, यह परीक्षा अधिक शिक्षा के साथ उच्च दबावों का सामना करने के लिए काठी से बाहर हो सकती है।

शैक्षणिक तनाव एक तरह का मूलभूत बोझ है। शैक्षणिक का अर्थ है एक अद्वितीय परीक्षा जो विभिन्न सामग्री का निर्माण करती है और एक कार्य को पूरा करती है। शैक्षणिक तनाव को प्रासंगिकता, बुद्धि और व्यक्तिपरक शैक्षणिक तनावों के अनुकूलन, छात्रों के तनाव कारकों और पारिस्थितिक छात्रों में तनाव कारकों के लिए एक मनोवैज्ञानिक या शारीरिक प्रतिक्रियाओं के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि

उपलब्धि का अर्थ है समस्याओं को हल करने में सफल होने के लिए सर्वोत्तम प्रयास करना और कौशल और प्रयास की आवश्यकता वाले कार्यों को पूरा करने के लिए पहेलियाँ। उपलब्धि को कार्यान्वयन या कड़ी मेहनत से प्राप्त करने के कार्य के रूप में माना जाता है। यह सब कुछ प्रयास से जीत, एक उपलब्धि, एक उल्लेखनीय और समृद्ध क्रिया माना जाता है। शैक्षणिक उपलब्धि को आम तौर पर परीक्षा ग्रेड या लगातार शैक्षणिक मूल्यांकन द्वारा माना जाता है, फिर भी कोई आम सहमति नहीं है कि हम शैक्षणिक तनाव को कैसे माप सकते हैं। शैक्षिक उपलब्धि और जिम्मेदारी से सीखने के परिणाम का अनुमान लगाया जा सकता है।

शैक्षिक तनाव शैक्षिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित माँगें हैं जो विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करना चाहता है अगर कोई छात्र शैक्षिक तनाव को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है तब इसका परिणाम गम्भीर मानसिक सामाजिक तथा संवेगात्मक रूप में हो सकता है। परीक्षा ही नहीं बल्कि अन्य बहुत से कारक शैक्षिक तनाव को बढ़ावा देते हैं जैसे-गृहकार्य समय पर पूरा ना कर पाना, व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रोजेक्ट पर कार्य करना, असाइनमेंट लिखना, समय का दबाव, आर्थिक सहयोग का अभाव, शैक्षिक योग्यता को लेकर चिंतित होना, कक्षाओं की समय सारणी और अध्ययन से सम्बन्धित आवश्यक अभिप्रेरणा का अभाव।

उद्देश्य :

१. शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रति कला स्तर के छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन करना।

२. शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रति विज्ञान स्तर के छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

इस अध्ययन के लिए निम्न 3 शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है :

• शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

• शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

• शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध अधिकल्प

अध्ययन में संपूर्ण जनसंख्या को सम्मिलित किया जाना संभव नहीं है। अतः न्यादर्श का चयन कर उसे शोध प्रक्रिया में समाहित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में "सर्वेक्षण अनुसंधान विधि" का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श का आकार

प्रस्तुत अध्ययन में देवरिया जिले के बाबा राघव दास पी.जी. कॉलेज से कुल 300 छात्र छात्राओं-कला, विज्ञान स्नातक, स्तर के 75-75 छात्र छात्राओं का चयन किया गया है। निम्न तालिका के द्वारा चुने गये याच्छिक विधि से न्यादर्श दर्शाये गये है –

तालिका - 1 : बाबा राघव दास पी.जी. कॉलेज के छात्र छात्राओं का न्यादर्श रूप में संख्यात्मक विवरण

कला स्तर		**कुल**	**विज्ञान स्तर**		कुल
छात्र	**छात्राएं**		**छात्र**	**छात्राएं**	
75	75	150	75	75	150

अध्ययन की सीमायें :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नांकित सीमाएं निर्धारित की गई है।

1. प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत देवरिया जिले के बाबा राघव दास पी.जी. कॉलेज का चयन किया गया है।
2. स्नातक स्तर के कला, विज्ञान के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण :

आंकड़े संकलन के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण कर उसके माध्यम से शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में छात्र-छात्राओं से उनकी अभिवृत्ति जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका - 2 छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों से संबंधित सारणी

क्र सं.	वर्ग	लिंग	मध्यमान	प्रामाणिक विचरण
1	कला स्नातक	छात्रायें	190.87	14.15
2	विज्ञान स्नातक	छात्रायें	191.0	16.73
3	कला स्नातक	छात्र	176.73	13.60
4	विज्ञान स्नातक	छात्र	185.93	18.12

विश्लेषण व व्याख्या

परिकल्पनाओं का सत्यापन

Ho = शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$

M1 = 190.87 σ_1 = 14.15

M2= 176.73 σ_2 = 13.60

$t = \frac{190.87 - 176.73}{2.26}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{14.15^2}{75} + \frac{13.60^2}{75}}$

= 6.25 = 2.26

df = (75-1)+(75-1) = 148

148 df के लिये 00.5 सार्थकता स्तर पर टी का प्रामाणिक मान 1.97 होता तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का प्रामाणिक मान 2.60 होता है। गणना किया गया t का यह मान 6.25 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् यह शून्य परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है। अतः शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है।

Ho = शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान एवं स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$

M1 = 185.93 σ_1 = 18.12

M2= 191.00 σ_2 = 16.73

$t = \frac{191.00 - 185.93}{2.84}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{18.12^2}{75} + \frac{16.73^2}{75}}$

= 1.78 = 2.84

df = (75-1)+(75-1)=148

148 df के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर 1 का प्रामाणिक मान 1.97 होता है तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का मान 2.60 होता है। t का गणनात्मक मान 1.78 इन दोनों से कम है अतः सार्थक नहीं है। अर्थात यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अतः शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति विज्ञान स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है। विज्ञान स्नातक स्तर के छात्रछात्रायें इन सामाजिक समस्याओं के प्रति कम संवेदनशील होते हैं।

Ho = शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

148 df के लिये 00.5 सार्थकता स्तर के लिये प्रामाणिक मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 1 का प्रामाणिक मान 2.60 होता है। t का गणनात्मक मान 3.52 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अतः शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है।

Ho = शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

$t = \frac{M^1 - M^2}{\sigma_{ed}}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_1^2}{N_2}}$

M1 = 176.73 σ_1 = 13.60 कला छात्रायें

M2= 185.93 σ_2 = 18.12 विज्ञान छात्रायें

$t = \frac{185.93 - 176.73}{2.61}$ $\sigma_{ed} = \sqrt{\frac{13.6^2}{75} + \frac{18.12^2}{75}}$

= 3.52 = 2.61

df = (75-1)+(75-1)=148

148 df पर t का 00.5 सार्थकता स्तर के लिये प्रामाणिक मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t का प्रामाणिक मान 2.60 होता है | t का गणनात्मक मान 3.52 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है अतः शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान स्तर के छात्रों की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर होता है।

शैक्षणिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षा के प्रति कला एवं विज्ञान विषयों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है। सभी छात्रों की सोच एक जैसी नहीं होती है।

सामाजिक संवेदनशीलता किसी व्यक्ति की उस कुशलता का वर्णन है जिससे वह व्यक्ति सामाजिक वार्तालाप एवं अन्य लोगों के लिए सामाजिक सम्मान प्रदान करने हेतु विभिन्न संकेत एवं संदर्भो की पहचान ग्रहण करने एवं समझने की प्रक्रिया में सक्षम हो। किसी भी देश की प्रगति या विकास वहाँ के छात्रों की शिक्षा पर निर्भर करता है लेकिन आजकल के छात्रों में शैक्षिक तनाव के कारण उनमें आक्रामक व्यवहार की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है, हम हर दिन अखबारों या दूरदर्शन के माध्यम से यह देखते हैं कि छात्रों के द्वारा किया जाने वाला आक्रामक व्यवहार उनके और उनके अभिवावकों के लिए बहुत ही कष्टप्रिय होता है। छात्र आपस में झगड़ते हैं, सड़कों पर कोहराम मचाते हैं और कभी-कभी तो किसी की हत्या तक कर देते हैं। ऐसे में हमें इस गम्भीर समस्या की ओर ध्यान देने की अति आवश्यकता है। आक्रामक व्यवहार के कारण ही छात्र समाज से दूर रहने लगते हैं और उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का पतन देखने को मिलता है। आज के छात्र सोशल मीडिया पर तो लाखों दोस्त खोजते हैं लेकिन उनके आस-पड़ोस में जो लोग रहते हैं उनके बारे में एक पल भी नहीं सोचते। उन्हे डिजिटल दुनियाँ हकीकत की दुनियाँ से ज्यादा लुभावनी लगती है और यही कारण है कि उनमें सामाजिक संवेदनशीलता की कमी पायी जाती है।

उपर्युक्त समस्याओं का निवारण हम शांति शिक्षा के द्वारा कर सकते हैं क्योंकि जब छात्रों में शांति की समझ विकसित होगी तो उनका तनाव भी कम होने लगेगा और अगर उनमें तनाव कम होने लगेगा तो उनका आक्रामक व्यवहार भी कम हो जायेगा क्योंकि आक्रामक व्यवहार का एक बड़ा कारण तनाव भी है। जब छात्रों का आक्रामक व्यवहार कम होगा तो उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का गुण भी स्वतः ही विकसित होने लगेगा। अतः आज के विद्यार्थियों को शान्ति शिक्षा देने की अति आवश्यकता है जिससे वे अपना आज और कल दोनों ही खुशहाल बना सकें। यह शोध इसी ओर एक सकारात्मक कदम होगा।

संदर्भ सूची :

1. शिक्षा की स्थिति वार्षिक रिपोर्ट 2014 प्रथम संस्थान
2. भारत बहिष्कार रिपोर्ट 2013-14 बदलाव के लिए पुस्तक, नई दिल्ली
3. आर. विमला,2013, दलित होने का क्या मतलब ? बच्चे हमारी विद्यालयों में आर्थिक राजनीतिक साप्ताहिक नवंबर 2, 2013
4. श्वेता बगई आर नीरा बिन्दु 2009 आदिवासी शिक्षा का अच्छा संतुलन
5. एल. भंडारी बारदोलाई 2006 आय में भिन्नता और शिक्षा के लिए वापसी, आर्थिक राजनीतिक साप्ताहिक, 403, (36), 3894: 3899, 09, 2006
6. शिक्षा सभी के लिए गुणवत एवं न्यायपूर्ण दिशा की ओर . रिपोर्ट राष्ट्रीय शैक्षिकयोजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
7. एम. सारुमथी, ज्ञानमुद्रा, 2014 शिक्षा का अधिकार : चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ,राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद
8. डेक्कन क्रॉनिकल समाचार पत्र, पहियों पर विद्यालय, 09 फरवरी, 2016 पेज 08
9. जनगणना 2011, भारत सरकार